ट्राइकोडर्मा रोगकारक के ऊपर जाल बनाकर उसे समाप्त करते हुए

प्रयोग करने हेतु सावधानियाँ

1. ट्राइकोडर्मा के प्रयोग के समय ये ध्यान रखना चाहिए कि भूमि में नमी पर्याप्त मात्रा में हो तथा जीवांश एवं कार्बनिक पदार्थ प्रचुर मात्रा में हो तभी इसका अच्छा लाभ मिलता है।
2. ट्राइकोडर्मा से उपचारित बीज को किसी अन्य फफूँदी नाशक से शोधित नहीं करना चाहिए।
3. इसक प्रभाव क्षारीय भूमि में अपेक्षाकृत कम असरकारक होता है।
4. ट्राइकोडर्मा प्रयोग करते समय आंख, नाक, मुँह व कान को कपड़े से ढंक लेना चाहिए।

लाभ

- रसायनिक फफूँदीनाशक के अपेक्षा यह सस्ता है।
- ट्राइकोडर्मा वातावरण के लिए हानिकारक नहीं है अत: यह पर्यावरणीय दृष्टि से सुरक्षित है।
- भूमि में लम्बे समय तक यह सक्रिय रहता है, फलस्वरूप बार-बार रसायनिक कीटनाशकों के प्रयोग की आवश्यकता नहीं होती है।
- ट्राइकोडर्मा का प्रयोग जैविक खादों के साथ ही किया जाता है।

भण्डारण

- इसके भण्डारण हेतु साफ, सूखा एवं छायायुक्त स्थान चुनना चाहिए।
- इसके बनने के बाद छ: माह के अन्दर ही प्रयोग कर लेना चाहिए।
- पॉलीथीन पैक में ट्राइकोडर्मा का भण्डारण सुरक्षित है।
- इसको सूर्य के सीधे प्रकाश से बचाना चाहिए।

ट्राइकोडर्मा का प्रयोग किन रोगों के उपचार हेतु

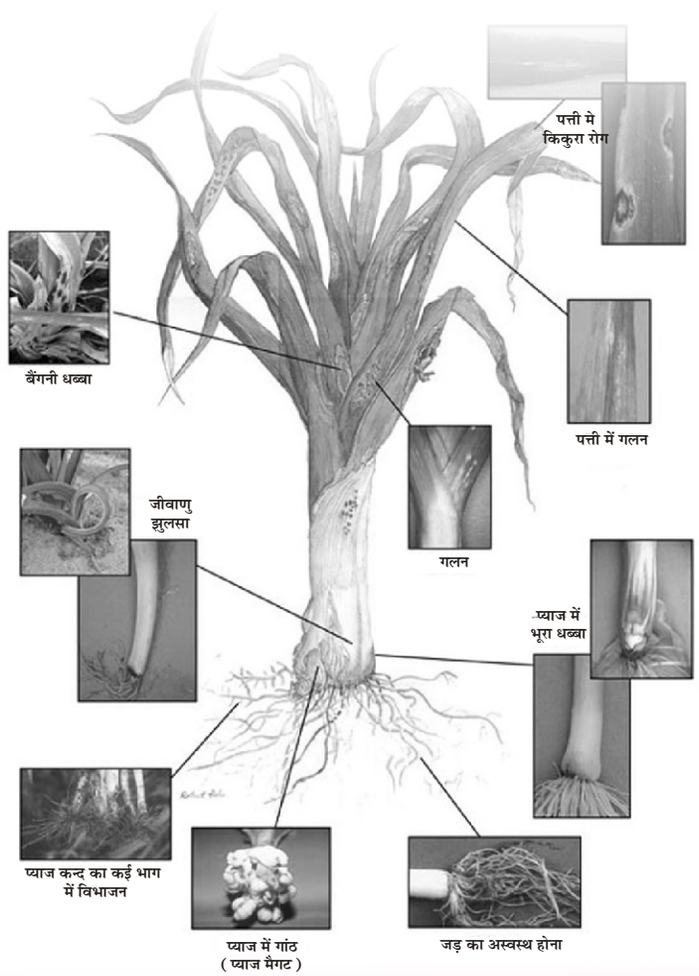

तो आइए!

इनकी सुरक्षा हेतु पहल करें

पर्यावरण को बचाएं, खुशहाली लाएं

गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप
पोस्ट बाक्स नं० 60, गोरखपुर-273001

पैक्स (डी०एफ०आई०डी० कार्यक्रम)
नई दिल्ली

ट्राइकोडर्मा

कृषि सहयोगी फफूँद

अरे किसान बहनों!
समस्याग्रस्त फसल क्या पैदावार देगी ?
चलो, स्वस्थ पौधों से जानकारी लेते हैं।

हाँ बहना!
ट्राइकोडर्मा नाम तो हमने भी सुना है पर ये है क्या ?

कल्पना चित्र : ट्राइकोडर्मा पौधे का पोषण करते हुए

ट्राईकोडर्मा एक लाभदायी फफूँद है जो बीज व भूमि से सम्बन्धित फफूँद जनित रोग कारकों की रोकथाम करता है। यह गन्ना, कपास, तिलहनी, दलहनी, सब्जियों एवं फल-फूलों आदि के फफूँदी जनक रोग कारकों को नियंत्रित कर बीजों का अच्छा अंकुरण एवं पौधों की स्वस्थ वृद्धि करने में मदद करता है यह मिट्टी में पनपता व बढ़ता है तथा पौधों की जड़ों के चारों तरफ सुरक्षा घेरा बनाकर अंकुरण के समय से ही सुरक्षा प्रदान करता है।

प्रयोग विधि

बीज उपचार

ट्राइकोडर्मा की 3-4 ग्राम मात्रा को 1 किलोग्राम बीज में सूखा या नम करके मिलाकर बुवाई करना चाहिए। इसका पाऊडर बीज से चिपक जाता है। बीज के जमने के साथ-साथ ट्राइकोडर्मा भी मिट्टी में चारों तरफ बढ़ता है। साथ ही जड़ को चारों तरफ से घेर लेता है। परिणाम स्वरूप फसल की अच्छी बढ़त होती है। ट्राइकोडर्मा अन्तिम अवस्था तक बना रहता है। ये बीज उपचार हमेशा छाये में ही करना चाहिए।

भूमि उपचार

ट्राइकोडर्मा की 1 किलोग्राम मात्रा को 25 किलोग्राम गोबर/कम्पोस्ट की नमीयुक्त खाद में मिलाकर किसी छाये वाले स्थान पर खेत में बुवाई के पूर्व मिट्टी में प्रति एकड़ की दर से मिलाना चाहिए।

कन्द या नर्सरी पौध उपचार

इसकी 5 ग्राम मात्रा को 1 लीटर पानी में घोल कर कन्द व नर्सरी पौध की जडों को डूबों कर रखने के पश चात् बुवाई/रोपाई करना चाहिए।

खाद उपचार

आधा किलोग्राम ट्राइकोडर्मा की मात्रा प्रति टन गोबर की खाद के ऊपर फैलाकर मिलाना चाहिए। फिर इसे भण्डारित करना चाहिए। इस खाद का प्रयोग करने से फफूँद जनित रोग नही उत्पन्न होते हैं।

कार्य प्रक्रिया

ट्राइकोडर्मा फफूँदी जो भूमिजनित एवं बीज जनित फफूँद-रोगकारकों का नियंत्रण करता है जिसमें इसके कवकतन्तु फसल के नुकसान दायक फफूँदी कवक तंतुओं को लपेटकर या सीधे अन्दर प्रवेश कर उनका जीवन रस चूस लेते हैं और समाप्त कर देते हैं साथ ही हानिकारक फफूँदी से सुरक्षा हेतु बीज के चारों ओर स्राव कर बीज के ऊपर कवच भी तैयार करते हैं।